بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 07 मार्च 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

अहादीस-ए-नबवी ﷺ और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के कथनों के प्रकाश में दुआओं के महत्त्व का बयान तथा रमज़ानुल मुबारक के हवाले से जमाअत के दोस्तों को स्वर्णीय उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-07.03.2025

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیۡ عَنِّیۡ فَاِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ وَلۡیُؤۡمِنُوۡا بِیۡ لَعَلَّہُمۡ یَرۡشُدُوۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा और सूरः अल-बक़रा की आयत 187 की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने इस आयते करीमा का अनुवाद बयान करते हुए फ़रमाया- अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे सम्बन्ध में सवाल करें तो निःसन्देह मैं निकट ही हूँ, मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है। अतएव चाहिए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक (आज्ञा मानें) कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदायत पाएं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि रमज़ान के शुरू होते ही तुरन्त यह विचार दिल में आता है कि नमाज़ों की ओर ध्यान हो क्यूँकि यह बरकतों वाला महीना है इस लिए सामान्यतः लोगों की दिशा मस्जिद की ओर अधिक हो जाती है। यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि कम से कम इन दिनों में लोगों को यह चिन्ता जाग जाती है कि हमें अल्लाह की ओर जाना है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं रमज़ान के दिनों में नर्क के द्वार बंद कर देता हूँ, शैतान को जकड़ देता हूँ और स्वर्ग के द्वार खोल देता हूँ। इस बात से लोग समझते हैं कि केवल रमज़ान में इबादतों की आवश्यकता है, यह ग़लत सोच है। रमज़ान में अल्लाह तआला ने इबादतों की ओर इस कारण से ध्यान दिलाया है ताकि फिर तुम उसे अपने जीवन का अंश बना लो, यदि यह नहीं तो केवल रमज़ान की इबादतें कुछ काम नहीं करेंगी।

आँहुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति ईमान की शर्तों को पूरा करते हुए और पुण्य की धारणा से रमज़ान की रातों में उठकर नमाज़ पढ़ता है तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर

दिए जाते हैं। अल्लाह तआला अति क्षमाशील है, वह हमें अवसर देता है कि यदि पूरे वर्ष में तुम से ग़लतियां हो गई हैं तो तुम नए सिरे से यह प्रतिज्ञा करो कि तुम भविष्य में अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने वाले बनोगे और उन समस्त नेकियों को करने वाले बनोगे जिनका अल्लाह ने आदेश दिया है, तो निःसन्देह वह अति दया के साथ तुम्हारी ओर ध्यान देगा। इस आयत में जो अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि जब मेरे बन्दे तुझसे सवाल करें ..... यहाँ बन्दे कहने का अभिप्रायः यह है कि जो अल्लाह के सच्चे प्रेमी हैं। अब प्रेमी ऐसा तो नहीं होता कि ग्यारह महीने उसे प्रेम याद न आए तथा वह केवल एक महीना प्रेम एवं स्नेह अभिव्यक्त करे। इस लिए हमें यह दुआ करते रहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! हमें अपनी निकटता प्रदान कर, हमें स्वीकार होने वाली दुआओं की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम में बार बार ध्यान दिलाया है कि अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों की ओर ध्यान दो। एक जगह हज़रत मसीह मौऊद ने फ़रमाया कि कुराने करीम में सात सौ आदेश हैं, बल्कि एक स्थान पर फ़रमाया कि सात सौ से अधिक आदेश हैं। जब हम रमज़ान में क़ुरान पढ़ेंगे तो स्वभवतः हम आदेश भी खोजेंगे और जब आदेशों की खोज होगी तो उनके अनुसार कर्म करने वाले भी होंगे, यही एक सच्चे आशिक़ का काम है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ईमान और नेक कर्म ऐसी चीज़ें हैं जो साथ साथ चलती हैं। जब अल्लाह तआला पर ईमान और उसके आदेशानुसार अमल होगा तो ऐसा व्यक्ति फिर ख़ुदा का दोस्त बन जाता है और जब ख़ुदा तआला की दोस्ती मिलेगी तो उससे अल्लाह तआला की निकटता की प्राप्ति होगी और फिर इस निकटता में बढ़ते चले जाएँगे। यह निकटता ऐसी नहीं कि फिर एक जगह रुकने वाली हो, अल्लाह तआला इस निकटता के बदले दुआओं को भी सुनेगा। अतएव रमज़ान में हमें इस स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला ने दुआओं की क़बूलियत के लिए भी खुछ शर्तें रखी हैं जिनमें पहली तो यही है कि उसका बंदा बनकर रहना होगा, विशुद्ध होकर उसकी इबादत करनी होगी, उसको समस्त शक्तियों का स्रोत समझना होगा, कोई झूठे ख़ुदा नहीं बनाने, अन्यथा यह शिर्क की ओर ले जाने वाली बात होगी। सबसे बड़ी चीज़ यह है कि अल्लाह तआला से उसका रहम और प्यार मांगो और उसके आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने का प्रयास करो।

आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने असंख्य अवसरों पर हमें नेकियों पर क्रियाशील रहने की ओर ध्यान दिलाया है। हज़रत मसीह मौऊद अले. ने हमें बार बार इसकी ओर ध्यान दिलाया है। बैअत की दस शर्तों में से अक्सर शर्तें यही हैं कि अल्लाह और उसके प्राणियों के अधिकारों की ओर ध्यान दो। अतः हमें इनके अधिकारों ओर ध्यान देना चाहिए, जब हम यह करेंगे तो अल्लाह तआला निःसन्देह हमारा मित्र एवं संरक्षक बन जाएगा, वह हमारी दुआओं को सुनेगा। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला उन लोगों की दुआ सुनता है जो असंतोष नहीं दिखाते, और यह नहीं कहते कि मैंने बहुत दुआएं कर लीं, अल्लाह तआला सुनता ही नहीं। फ़रमाया- यह कुफ़्र है और अल्लाह से दूर ले जाने वाली बात है।

हज़रत मसीह मौऊद अले. फ़रमाते हैं कि यह तो दो मित्रों का सम्बन्ध होता है, कभी दोस्त अपने दोस्त की मान लेता है, कभी दोस्त अपनी मनवा लेता है। इसी प्रकार ख़ुदा मामला करता है,

परन्तु प्रत्यक्षतः जो एक मोमिन की दुआ ख़ुदा निरस्त करता है यह भी वास्तव में उसकी भलाई के लिए है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरे बन्दे मेरे विषय में प्रश्न करें कि ख़ुदा के अस्तित्व का प्रमाण क्या है तो जवाब यह है कि मैं अत्यन्त निकट हूँ, किसी बड़े प्रमाण की आवश्यकता नहीं, अत्यन्त सरलता पूर्वक मेरे अस्तित्व का प्रमाण देखा जा सकता है और प्रमाण यह है कि जब कोई दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी सुनता हूँ और अपने इलहाम से उसकी सफलता की सूचना देता हूँ। क़ुरआन में जो यह कहा गया है कि يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अले. ने इसकी अत्यन्त सूक्षम व्याख्या फ़रमाई है। फ़रमाया- ग़ैब भी ख़ुदा का नाम है, फ़रमाया- हर दुआ से पहले यह विश्वास हो कि ख़ुदा है तथा वह अत्यधिक गुणों को अपने अन्दर रखता है, जब इस विश्वास के साथ आगे बढ़ोगे तो फिर तुम्हें ख़ुदा का वास्तविक बोध प्राप्त होगा, यह नहीं कि केवल रमज़ान में नमाज़ों की ओर ध्यान पैदा हो। अल्लाह तआला का फज़ल है कि अहमदी लोग नमाज़ों की ओर अत्यधिक ध्यान देते हैं किन्तु फिर भी इसमें कमी है।

चाहिए कि हम इस रमज़ान को ऐसा रमज़ान बनाएं जो हमारी इबादतों के स्तर बुलन्द करने वाला हो, हमें ख़ुदा तआला की निकटता दिलाने वाला हो, ताकि हम अल्लाह तआला के शुद्ध बन्दे बनने वाले हों। अतः इस रमज़ान में हमें यह संकल्प करना चाहिए कि हम अपनी इबादतों को जीवंत करेंगे, फिर इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ भी मांगें। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुआ उस परीक्षा के मुक़ाबले पर जो आ चुकी है, और उसके मुक़ाबले पर जो अभी आने वाली है, लाभ देती है, ऐ अल्लाह के बंदो! तुम्हारे लिए अनिवार्य है कि तुम दुआएं करना जारी रखो।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि केवल रमज़ान के महीने ही में तो कष्ट एवं समस्स्याएं नहीं आतीं, विभिन्न समय पर आती रहती हैं इस लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम केवल उस समय ही दुआ न करो जब कठिनाई आए बल्कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुआ उन कठिनाइयों से बचाने में भी सहायता देती है जो अभी नहीं आईं, इस लिए निरन्तर दुआ से काम लेते रहना चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि तुम्हारा रब निकट के आकाश पर अवतरित होता है, और जब रात का तीसरा भाग शेष रह जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कौन है जो मुझे पुकारे तो मैं उसे जवाब दूं, कौन है जो मुझसे मांगे तो मैं उसको दूं, कौन है जो मुझसे क्षमा चाहे तो मैं उसे क्षमा प्रदान करूं। यह केवल रमज़ान के महीने के लिए नहीं बल्कि निरन्तर है। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति यह चाहता है कि अल्लाह तआला कष्टों के समय उसकी दुआओं को क़बूल करे तो उसे चाहिए कि सुविधा एवं समृद्धि में अत्यधिक दुआ करे। अतएव ये बातें अत्यन्त आवश्यक हैं, हमारा अल्लाह तआला से सुदृढ़ सम्बन्ध होना चाहिए।

एक रिवायत में यह भी आता है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं बन्दे की सोच के अनुसार उसके साथ व्यवहार करता हूँ, जिस समय बन्दा मुझे याद करता है, मैं उसके साथ होता हूँ, यदि वह मुझे दिल में याद करता है तो मैं उसे दिल में याद करूंगा, यदि वह मेरी चर्चा किसी सभा में करेगा तो मैं उसकी चर्चा उससे बड़ी सभा में करूंगा, यदि वह मेरी ओर एक बालिश्त आएगा तो मैं उसकी ओर एक हाथ जाऊँगा, यदि वह मेरी ओर एक हाथ आएगा तो मैं उसकी

ओर दो हाथ जाऊँगा, यदि वह मेरी ओर चल कर आएगा तो मैं उसकी ओर दौड़ कर जाऊँगा। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हर अहमदी को यह प्रयास करना चाहिए कि अल्लाह तआला की याद से अपनी ज़बानों को सुसज्जित रखे, हमारा प्रत्येक कर्म ऐसा होना चाहिए कि हम ख़ुदा की ओर क़दम बढ़ाने वाले हों। एक रिवायत में लिखा है कि नबी करीम स. ने फ़रमाया कि ज़ुन्नून अर्थात युनुस अलैहिस्सलाम ने मछली के पेट में यह दुआ की- لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّی کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ फ़रमाया- इस दुआ को जो भी मुसलमान किसी दुविधा के समय करेगा, अल्लाह तआला उसकी दुआ को अवश्य ही क़बूल फ़रमाएगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अपने बन्दों पर अत्यन्त दयालु है, उसने स्वंय ही बन्दों को दुआएं सिखाई हुई हैं। क़ुरआने करीम में जो विभिन्न दुआएं सिखाई गई हैं वे इसी लिए हैं ताकि हम ये दुआएं मांगें और अल्लाह तआला अवश्य ही इनको क़बूल फ़रमाएगा, परन्तु शर्त वही है कि हम पहले उसका हक़ अदा करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अले. इस दुआ के बारे में फ़रमाते हैं कि इससे एक यह पता चलता है कि अल्लाह तआला भाग्य को भी बदल देता देता है, रोना धोना और दान दक्षिणा जो हज़रत युनुस अले. की क़ौम में घटना हुई थी, दण्डित करने वाले आरोप पत्र को भी खंडित कर देता है। फ़रमाया- जो लोग कष्टों के आने से पहले दुआ और इस्तगफ़ार करते हैं और दान इत्यादि देते हैं, अल्लाह तआला उन पर दया करता है और उन्हें अपने प्रकोप से बचा लेता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- पिछले दिनों मैंने दुआओं की तहरीक की थी, उसमें इस्तगफ़ार की ओर भी ध्यान दिलाया था। हज़रत मसीह मौऊद अले. ने फ़रमाया कि इस्तगफ़ार एक ढाल है, अतः इसकी ओर भी ध्यान दें, ख़ूब इस्तगफ़ार करें, सच्चे दिल से दुआओं की ओर ध्यान दें, रमज़ान के बाद भी दुआओं पर क़ायम रहने का प्रयास करें और फिर देखें कि ख़ुदा तआला किस प्रकार दौड़ कर हमारे पास आता है और हमें अपनी छत्रछाया में ले लेता है।

हुज़ूरे अनवर ने दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि आजकल जो दुनिया में कुछ स्थानों पर समस्सयाएं हैं, पाकिस्तान, बंगला देश, अल्जीरिया इत्यादि तथा कुछ अफ़्रीकन देश जहाँ कुछ विशेष दलों ने क़ब्ज़े किए हुए हैं अथवा इन दलों की ओर से आक्रमण होते हैं, वहां की सरकारें भी इनसे डर कर इनकी बात मान लेती हैं, हमें यह दुआ करनी चाहिए कि ऐ अल्लाह! हमें इन दुष्टों से मुक्ति दे, स्वंय इनसे बदला ले। जब हम इस तरह दुआएं करेंगे तो अल्लाह तआला अवश्य एक महान क्रान्ति पैदा फ़रमाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अले. फ़रमाते हैं कि उसकी कृपा की प्राप्ति का निकटतम मार्ग दुआ है और दुआ के सम्पूर्ण नियम ये हैं कि उसमें पीड़ा हो, व्याकुलता हो, दुःख हो। दुआओं की ओर हमें बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है, इस रमज़ान को ऐसा रमज़ान बनाएं कि जो दुआओं की क़बूलियत वाला रमज़ान हो। अल्लाह तआला हमें समस्त शत्रुओं एवं अत्याचारियों से मुक्ति दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ. عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131